यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल
जनवरी–मार्च 2021
वर्ष 11, अंक–21

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक

डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श

डॉ. रमा

संपादक

डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग

रीमा प्रजापति

आवरण चित्र

अंकीता चौहान

ले-आउट

हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय

मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार

एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता

आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण

हरिन्द्र तिवारी

हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- 'अग्नि-ऋचा' कलाम की जीवन यात्रा... : *प्रो. रमा* 3
- 'कभी न छोड़े खेत' / *प्रो. इंदु वीरेंद्रा* 6
- हिंदी में अनुसंधान : स्थिति... / *प्रो. सत्यकेतु सांकृत* 9
- भक्तिकालीन कविता के... / *प्रो. कैलाश नारायण तिवारी* 12
- रंगमंच की अंतरयात्रा / *प्रो. चंदन कुमार* 15
- नवगीत काव्य-धारा का उद्भव... / *डॉ. प्रकाश चंद्र गिरि* 17
- कविता : मिथक और पारिस्थितिकी / *प्रो. गजेंद्र पाठक* 20
- साठोत्तरी हिंदी कविता : परिवेश... / *प्रो. रसाल सिंह* 24
- संत रविदास : व्यक्तित्व एवं विचार / *डॉ. राजेश पासवान* 27
- 'आत्मजयी' और 'वाजश्रवा के ... / *अभिनव प्रकाश* 30
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की ... / *डॉ. अमित सिन्हा* 33
- भाषायी अवरोधों को तोड़ता ... / *डॉ. कविता भाटिया* 36
- निर्मल वर्मा की रचनाओं में सामाजिक ... / *डॉ. अमृता* 39
- स्वावलंबन और गांधीजी / *डॉ. सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी'* 42
- नारी समस्या और कृष्णा सोबती ... / *अनिता देवी* 44
- आदिवासी हिंदी उपन्यासों का उद्भव ... / *अंजली कुमारी* 47
- राकेश रेणु की कविताई : स्त्री मन ... / *अंकिता चौहान* 50
- जयशंकर प्रसाद की प्रकृति विषयक ... / *डॉ. अर्चना त्रिपाठी* 53
- अल्पसंख्यक विमर्श का स्वरूप और ... / *डॉ. आसिफ उमर* 55
- समकालीन हिंदी स्त्री कविता में पितृसत्ता ... / *भव्या कुमारी* 58
- कोरोना के भयावह दौर में पलायन ... / *भावना* 61
- समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त ... / *चंद्रकांत सिंह* 64
- द्रविड़ भक्ति-काव्य : उद्भव, स्वरूप ... / *डी.ए.पी. शर्मा* 67
- विभाजन और विस्थापन की ... / *डॉ. दीपिका विजयवर्गीय* 71
- बाणभट्ट की आत्मकथा में ... / *डॉ. पल्लवी* 73
- अशोक एक बौद्ध के रूप में / *दुर्गेश पाण्डेय* 75
- 'पीली आँधी' सामाजिक विसंगतियों ... / *हुलासी राम मीना* 78
- 'गालिब ग़ैर नहीं हैं, अपनों से अपने हैं' / *मोहम्मद जावेद* 81
- नारी मनोविज्ञान और जैनेंद्र कुमार ... / *जयश्री काकति* 85
- गांधी और राष्ट्रभाषा हिंदी / *डॉ. कमलेश कुमारी* 88
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी और संतराम बी.ए. / *कविता देवी* 91
- स्त्री विमर्श की अवधारणा और ... / *डॉ. महजबी* 94
- केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में ... / *डॉ. मणिबेन पटेल* 97
- श्री हरिपद्यनाभ शास्त्री ... / *प्रो. मन्जुनाथ एन. अंविग* 99
- काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में ... / *डॉ. मंजुल शर्मा* 102
- कोरोना महामारी के ... / *ज्योति भोला-नम्रता सोनी* 105
- कश्मीरी स्त्री : अनसुनी पीड़ा ... / *नेहा चतुर्वेदी* 108

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।

समकालीन हिंदी कविता में अभिव्यक्त स्त्री-स्वर

चंद्रकांत सिंह

समकालीन स्त्री रचनाकारों ने एक नया आइकन प्रस्तुत किया है, उनकी जीवन-दृष्टि में स्त्रीवादी नजरिया दृष्टिगत होता है जो कविता को उथला होने से बचाता है। समकालीन रचनाकारों में निर्मला गर्ग अहम हैं, उनकी कविताएँ समकालीन हिंदी कविता में अपनी विशेष पहचान बनाती हैं। इन कविताओं में स्त्री-मन की अभिव्यक्ति के साथ देश-देशांतर का भूगोल है। कवयित्री ने बड़े जतन के साथ अपनी कविताओं को वैश्विक संदर्भ में उजागर किया है। आतंकवाद, हिंसा, उत्पीड़न आदि के ताने-बाने में बुनी हुई उनकी कविता आज के समय को पूरी जटिलता के साथ खोलती है। कविताओं में शहरी जीवन का चित्रण है लेकिन इससे यह कतई नहीं कह सकते कि कवयित्री के संस्कार एवं अनुभव कृत्रिम हैं। उन्होंने गहरे धँसकर जीवन जिया है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में जीवन और उसका भदेसपन पूरेपन के साथ प्रगट हुआ है।

'मेरी बहनें' कविता ईश्वर को आधुनिक नजरिए से देखती है। इस कविता में ईश्वर को दैनन्दिन कामों से अनभिज्ञ दिखाया गया है। धर्म के जटिल स्वरूप को तोड़ने के साथ-साथ यह कविता दर्शाती है कि स्त्री अपना सतत निर्माण कर रही है, उसे भाग्यवाद एवं नियतिवाद की आवश्यकता नहीं। ईश्वर के बहाने यह कविता आम जीवन की गहमागहमी को भी चित्रित करती है जिसकी दुश्वारियाँ देखने योग्य हैं। कविता दैवीय रूपकों का सामान्यीकरण है, जहाँ जीवन को निकटता से देखने का प्रयास है। जीवन के ऊहापोह एवं जीविका-रोटी आदि के लिए मनुष्य का सहज प्रयास उसे विशेष बनाता है। एक तरह से कहा जाए तो यह कविता साधारण को असाधारण, सामान्य को विशेष बनाती है :

उसकी आँखें नहीं होतीं/आततायी और मासूम में वह/फर्क नहीं कर पाता/वह एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकता/न सौदा-सुलुफ ला सकता है/उसे बाजार के भाव पता नहीं/ताजा बहते पसीने की गंध कैसी होती है

वह नहीं जानता/रोटी से उठती हुई खुशबू भी उसे/आह्लादित नहीं करती

'मुक्ति का पहला पाठ' नामक कविता में निर्मला गर्ग ने देसना नामक स्त्री के जरिए सामंतवादी चिंतना पर प्रहार किया है। जहाँ एक स्त्री पति की सलामती के लिए व्रत आदि रखती है, वहीं देसना एक आधुनिक स्त्री है जो कर्मकांड को सिरे से खारिज करती है। उसे लगता है कि स्त्रियों को सदियों से गुलाम बनाने की जो अवधारणा है उसे खंडित किया जाना चाहिए तभी वास्तविक अर्थों में स्त्री-मुक्ति संभव है :

यह कैसा विधान है!/मैं भूखी रहूँगी तो निरंजन ज्यादा दिनों तक जिएँगे!/यदि ऐसा है तो निरंजन क्यों नहीं रहते मेरे लिए निराहार/क्या मुझे ज्यादा वर्षों तक नहीं जीना चाहिए?/शास्त्रों को स्त्रियों की कोई फिक्र नहीं

उन्हें लिखा किसने?/किसने जोड़ा धर्म से-मैं जानना चाहती हूँ/चाहती हूँ जाने सब स्त्रियाँ/पूँछे सवाल

मुक्ति का पहला पाठ है पूछना सवाल[1]

स्त्री घर-बार सँभालती है, हर वस्तु को करीने से रखती है। घर में पसरे मातमी आसव को पीकर बड़े भाव से तिनका-तिनका सँवारती है। मधु शर्मा की 'औरत की इच्छा' कविता स्त्री आकांक्षाओं की कविता है जिसमें घर-बार के संकट को जज्ब कर जाने का हौसला है। कवयित्री लिखती हैं :

औरत की इच्छा फैली है/घर भर में/घर भर में फैले हैं दुःख/औरत बीनती है दुःख/और छोड़ देती है इच्छाएँ।[2]

कवयित्री सरोज परमार ने भी 'रेत पर' नामक कविता में स्त्री-मन के संघर्ष को वाणी देनी चाही है। रेत के प्रतीक के सहारे कवयित्री ने कामकाजी स्त्री की अंतर्व्यथा और पीड़ा को अभिव्यक्त किया है।

रेत पर उकेरती उंगलियाँ/मिटाती हथेलियाँ/आकृतियाँ/दर्द, करकराती रेत का/झेलती/बिवाइयाँ[3]

कवयित्री सरोज परमार की कविता पर बात करते हुए प्रख्यात समीक्षक सुशील कुमार फुल्ल जी लिखते हैं कि–"सरोज परमार की कविता बहुआयामी है–शिल्प की दृष्टि से भी तथा विषयवस्तु की विविधता के कारण भी। जहाँ घर-परिवार के दुःख-सुख को कविताओं में प्राण मिले हैं, वहीं सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियों ने रचनाओं को प्रखरता प्रदान की है।"

निश्चय ही कवयित्री सरोज परमार की कविता घर की मुश्किलों के बीच जूझती हुई स्त्री का स्पष्ट बयान हैं। इन